विश्वविद्यालय दिवस 2026 पर
माननीय कुलपति आचार्य राज कुमार मित्तल जी
का उद्बोधन

विश्वविद्यालय स्थापना दिवस के इस पावन अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई। मैं अपने पूर्व कुलपति के प्रति विश्वविद्यालय की ओर से आभार प्रकट करता हूं कि जिन्होंने बहुत मेहनत और दूरदृष्टि से इस विश्वविद्यालय को स्थापित किया। हम सब जानते हैं, जैसे आज पूर्व वक्ताओं ने भी बताया कि किसी भी संस्था को खड़ा करना मात्र बिल्डिंग्स को खड़ा करना नहीं है, बल्कि उसमें अरमानों को साथ जोड़ना आवश्यक है। इट इज अ प्रोसेस ऑफ बिल्डिंग कल्चर, मैन मेकिंग एंड पुटिंग ऑल वर्किंग दियर इंटू ए थॉट प्रोसेस आइडिएशन प्रोसेस। व्हिच इज डिफिकल्ट वन, ऐज आइडियाज अल्टीमेटली लीड्स टू इन्नोवेशन, इन्नोवेशन लीड्स टू एंटरप्राइज एंड एंटरप्राइज लीड्स टू नेशन बिल्डिंग।

जब हम बात करते हैं कि कोई भी विश्वविद्यालय, संस्था या व्यक्ति, विकसित भारत के निर्माण में, अपना क्या योगदान दे सकता है? तो मुझे लगता है कि विकसित भारत के निर्माण के लिए पहले व्यक्ति को स्वयं विकसित होना पड़ेगा और तब संस्था को विकसित करना होगा। इसके लिए उसे अपनी कैपेबिलिटी को बढ़ाना होगा, अपने विचारों तथा निरन्तरता का विकास करना होगा और यदि भारत सशक्त होगा तो वह अपनी सशक्त जनसंख्या, युवाओं और संस्थाओं के आधार पर ही यह कार्य कर सकता है। इसलिए विकसित भारत की बात करने का अर्थ हमारे युवाओं ,संस्थाओं और लोगों को सशक्त और सामर्थ्यवान बनाना ही है।

यदि हम सशक्त भारत की बात करें तो ऐसा भारत जैसे प्रोफेसर फुरकान क़मर जी ने भी बताया कि केवल आर्थिक दृष्टि से यदि हम संपन्न हो जाते हैं, 30 ट्रिलियन डॉलर, 40 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था खड़ी हो जाती है। मात्र अर्थव्यवस्था खड़ा करने से नहीं होगा, क्योंकि आज भी किसी से बात करें तो हम सब यही कहते हैं कि पिछले 30 सालों में बहुत प्रगति हुई, बहुत सुविधाएं मिलती हैं, मगर खुशी गायब है। हैप्पीनेस इज मिसिंग। तो हम सुख की बात करें की हम सुखी कैसे हों? यह हम सबके लिए आवश्यक है। एक विकसित भारत में, ऐसा भारत जिसमें गरीबी न हो, ऐसा भारत जिसमें सभी लोगों को काम मिले और पर्यावरण की दृष्टि से हम उसके रक्षक हों, प्रकृति के साथ खिलवाड़ न करें और हम सब प्रकृति की रक्षा करने में सहभागी हों।

आठ दस कंपनी, आठ दस बड़े लोग यह कहें कि 20 प्रतिशत ऊपर के लोगों के पास 80 प्रतिशत से ज्यादा धन संपदा हो और बहुत सारे लोग हाशिये पर चले जाएं, तो ऐसे विकास का मायने कम हो जाता है। ऐसा भारत जिसमें वंचित वर्ग और महिलाओं की भी सहभागिता हो को

हम कहेंगे कि वह समर्थ विकसित भारत है। शिक्षा 'सशक्तिकरण' का, ' ट्रांसफॉर्मेशन' का, ' सोशियो इकोनॉमिक ट्रांसफॉर्मेशन' का एक सबसे बेहतर माध्यम है। इसलिए किसी भी संस्था को सशक्त करना अत्यंत आवश्यक है और उस सशक्तिकरण के लिए जो इंस्टिट्यूशनल डेवलपमेंट प्लान है, वह उसका माध्यम है।

हम किसी काम को दो प्रकार से कर सकते हैं- एक तरीका यह है कि हम किसी काम को अनियोजित तरीके से करते जाएं, और दूसरा तरीका है कि उस काम को एक योजनाबद्ध तरीके से करें। यदि योजनाबद्ध तरीके से करेंगे तो हमारे सफलता के अवसर ज्यादा होंगे या हम कहें कि फेलियर के चांसेस को मिनिमाइज कर पाएंगे, इससे इंस्टिट्यूशनल डेवलपमेंट प्लान और जो उसकी क्रियान्वयन की प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं को हम कम कर सकेंगे और उनके ऊपर हमारा नियंत्रण अधिक होगा। और सही लक्ष्य की ओर हम अधिक दक्षता से काम कर पाएंगे।

इसलिए इंस्टिट्यूशनल डेवलपमेंट प्लान, जो आप सबके समक्ष रखा गया है, उसके तहत 2045 तक एक समर्थ, सशक्त और विकसित भारत को कैसे खड़ा किया जाए? उसमें हमारी क्या भूमिका हो? हम सब, प्रत्येक स्टेकहोल्डर, चाहे वो विद्यार्थी हो, शोधार्थी हो या फैकल्टी हो या गवर्नमेंट की तरफ से रेगुलेटरी बॉडीज हों, या हमारे और जो भी हैं, अलुम्नाई हो, उन सबकी क्या भूमिका रहने वाली है? उनका सहयोग कैसे लिया जाए? इस दृष्टि से एक योजना बनाई गई है और वो योजना आप सबके समक्ष रखी गई है।

इस योजना की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम उसके साथ कितना जुड़ते हैं। यह अभी एक ड्राफ्ट है। इस ड्राफ्ट को आप पढ़िए और पढ़ने के बाद जैसे प्रोफेसर राजू जी ने भी बताया कि अपने सुझाव अवश्य दें, ताकि इसको एक ऐसा डॉक्यूमेंट बनाया जा सके जो हम सबके कॉमन विजन को रिफ्लेक्ट करता हो। यह डॉक्यूमेंट ऐसा नहीं है कि सिर्फ ऊपर बैठे एक या दो लोगों के द्वारा बना कर इंप्लीमेंट करने के लिए दे दिया गया हो। यदि ऐसा होता है तो उसकी सफलता कम और फेलियर ज्यादा निश्चित है। हम चाहते हैं कि यह एक सफल डॉक्यूमेंट हो और हम सब अपनी अपनी भूमिका उसमें निश्चित करें, यह हम सबके लिए आवश्यक है।

मैं अपने से पूर्ववर्ती सभी कुलपतियों, **प्रोफेसर डी. आर. गाडेकर जी**, **प्रोफेसर जी. नानचिरैय्या जी, प्रोफेसर बी. हनुमैय्या जी, प्रोफेसर आर.सी. सोबती जी, प्रोफेसर संजय सिंह** जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं, क्योंकि शुरू में जब किसी भी इंस्टिट्यूशन को बिल्ड करते हैं, उसमें कैसे उसकी योजना बने, ये सारे के सारे कार्य और छोटी सी भी कोई बिल्डिंग बनानी पड़ती है, छोटा सा भी क्लासरूम खड़ा करना पड़ता है या कोई और काम करना पड़ता है, उसमें कितनी बाधाएं झेलनी पड़ती हैं, मैं इसे भलीभांति समझता हूं, हम सब इसके साक्षी हैं। तो उनके किए कार्यों को, हम सोच सकते हैं कि कितना बड़ा काम उन्होंने खड़ा किया हैं और

मैं व्यक्तिगत रूप से उन सबके प्रति ज्यादा आभार व्यक्त करता हूं, क्योंकि मैं उनके सबके कृतित्व के कारण निर्मित इस भव्य विश्वविद्यालय को थोड़ा बेहतर तरीके से देख पा रहा हूं।

ये विश्विद्यालय आपके कंधों पर खड़ा हुआ है जहां से मैं देख पा रहा हूं कि विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में यह विश्वविद्यालय अपना योगदान और बेहतर तरीके से कैसे दे सकता है।

साथियों, जब हम विकसित भारत और अपने विश्वविद्यालय की कल्पना करते हैं या समर्थ की बात करते हैं, या उसको हम कहते हैं कि वो एक परफॉर्मिंग इंस्टिट्यूशन होना चाहिए, ऐसा इंस्टिट्यूशन, जिसमें ऐसी शक्ति हो जो समाज में बदलाव ला सके। समाज के लिए आर्थिक दृष्टि से और सामाजिक दृष्टि से ऐसा उपयोगी ज्ञान, शोध, एक्सटेंशन एक्टिविटी कर सके, जिससे कि हमारे विकसित भारत का सपना साकार हो।

आप जानते हैं कि जो एजुकेशन सिस्टम आज से दस साल पहले था, वो आज नहीं है और जो आज से दस साल बाद होगा या बाईस साल बाद होगा, दो हज़ार सैंतालीस तक, वो कुछ और अलग तरह का सिस्टम होगा। ऐसे सिस्टम में हम अपने आप को यदि अलग रखेंगे तो उसका लाभ नहीं होगा अन्यथा यह हो सकता है कि हम इररेलेवेंट हो जाएं। आने वाले समय में कोई भी इंस्टिट्यूशन जो केवल डिग्री देने पर फोकस करेगा, वह सर्वाइव नहीं कर पाएगा। इसलिए हमें जो भी परिवर्तन होने हैं, उन सबके प्रति सचेत रहना है और उनसे अवगत होना हम सबके लिए आवश्यक है।

जैसे हम कहें कि आज के दिन यदि युवाओं की सबसे बड़ी रिक्वायरमेंट क्या है? तो हम कहेंगे रोजगार और रोजगार के लिए हमें ज्ञान मात्र, एक बुकिश नॉलेज नहीं चाहिए बल्कि हमें चाहिए एक व्यावहारिक ज्ञान, ऐसा ज्ञान जो युवाओं को नौकरी दिलाने में मदद करे, स्किल डेवलपमेंट की तरफ ले जाए। सबसे ज्यादा जरूरी है कि हम किस तरीके से युवाओं की सोच को जॉब सीकिंग बिहेवियर से जॉब प्रोवाइडर बिहेवियर की तरफ ले जाएं। उसके लिए जरूरी है कि हमारे विश्वविद्यालय और इंडस्ट्री का जो रिलेशनशिप है, वो प्रगाढ़ और दृढ़ हो ताकि वहां के लोग यहां पर बच्चों को एक व्यावहारिक ज्ञान दें। अप्रेंटिशशिप के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान छात्रों को मिले उससे उनकी दक्षता में वृद्धि हो, और हमें उनके लिए सोचना होगा कि वे एंटरप्रेन्योर कैसे बनें? वो स्टार्टअप कल्चर का हिस्सा कैसे बनें? क्योंकि यदि ऐसा होगा, तो ये एंटरप्रेन्योरशिप, ग्रोथ एंप्लॉयमेंट मल्टीप्लायर का काम करती है। जॉब से सिर्फ एक व्यक्ति को जॉब मिलती है। यदि एंटरप्रेन्योर बनता है, उससे कम से कम दस बारह लोगों को जॉब मिलने में मदद मिलती है। तो इंडिया नीडड्स एंटरप्रेन्योरशिप लेड ग्रोथ और उसके लिए जरूरी है युवाओं की मानसिकता को बदलना। उनमें जॉब सीकिंग नहीं जॉब प्रोवाइडर मेंटालिटी को विकसित करना।

दूसरी जो आवश्यकता है, वो यह है कि आज जिस गति से बदलाव हो रहे हैं, उस बदलाव में जो जॉब का आने वाला परिदृश्य है, वो भी तेज गति से बदल रहा है। आज जिस स्किल के बेस पर हमे नौकरी मिली है, वो स्किल कल आउटडेटेड हो सकती है। तो जिस गति से ये परिवर्तन हो रहे हैं, उस गति से हमें भी अपने आप को अपस्किल करना पड़ेगा, और छोटे छोटे माइक्रो कोर्सेस शुरू करने पड़ेंगे। मैं एक एक एरिया से ले रहा हूं, जैसे रिटेल का, डिजिटल मार्केटिंग का हो सकता है, जो एक पर्टिकुलर स्किल है। आज इसकी जरूरत है। आज छोटा सा कोई कोर्स हम ऑफर करें और ये माइक्रो कोर्सेस के माध्यम से बच्चों की स्किलिंग करें और जो जॉब में चले गए, उनको बीच में अपस्किल कर दें। तो वो ऐसा एक माध्यम बने कि कोई भी यहां किसी भी समय आकर अपना कोर्स कर ले, अपने आप को अपस्किल कर ले, रिस्किल कर ले, अपडेट कर ले और उसके बाद वो अपनी जॉब में अपने आप को रेलेवेंट रखे।

आज जैसे हम देख रहे हैं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और फोर पॉइंट जीरो टेक्नोलॉजीज की कितनी चर्चा है। पुराने लोग जिनको इनके बारे में ज्ञान नहीं वे नौकरी में अप्रासंगिक हो जाएंगे इसलिए एक ऐसा सेंटर खुले, जो विद्यार्थियों को इस तरह की स्किलिंग के बारे में लगातार छोटे छोटे कोर्सेस के माध्यम से, फ्लेक्सिबल लर्निंग के माध्यम से, छोटे छोटे मॉड्यूल के माध्यम से, समय की भी जिसमें पाबंदी ना हो। नौ बजे से पांच तक की बिल्कुल बाध्यता ना हो। ऐसा कोर्स जो वीकेंड में भी किया जा सकता हो, सैटरडे को भी किया जा सकता हो, संडे को भी क्लास हो जाए। पांच बजे के बाद कोई क्लास लगे। जैसे प्रोफेसर राजू जी भी यही बात कह रहे थे कि किस तरीके से अपने इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग करें। पब्लिक इंस्टीट्यूट के रूप में समाज के वंचित वर्ग और गरीब वर्ग के बच्चों को यदि ऑनलाइन, ऑफलाइन, या हाइब्रिड फ्लेक्सिबिलिटी के साथ ऐसे कोर्सेस दे सकते हैं तो बेहतर होगा । एक ऐसा डायनामिक सिस्टम यदि खड़ा करते हैं जो मुझे लगता है बहुत जरूरी होगा।

और तीसरा जो परिवर्तन हम सब आजकल देख रहे हैं, वो टेक्नोलॉजी का है। हाउ टेक्नोलॉजी कुड बी इंटीग्रेटेड टू द एजुकेशन सिस्टम। चाहे वो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हो या कोई और, जो मॉडर्न टेक्नोलॉजी आज हम सब देख पा रहे हैं- सेमीकंडक्टर है, क्वांटम कम्प्यूटिंग है, बायोटेक्नोलॉजी, क्लीन एनर्जी, एडवांस मटेरियल, स्पेस टेक्नोलॉजी और बहुत सारी लेटेस्ट टेक्नोलॉजी हैं।

तथ्य यह है कि भारत का विकसित होना उन टेक्नोलॉजीज में आगे बढ़ने और उनमें दक्षता प्राप्त करने पर निर्भर करता है। यदि इन तकनीकी ज्ञान में हम पिछड़ेंगे तो हमारे विकास की गति धीमी हो जाएगी। इसलिए हमें जितनी भी ये कटिंग एज टेक्नोलॉजीज है उन सबका अपने विश्वविद्यालय में एक सेंटर कैसे खड़े हों, इसमें हम पीछे न रहें ,जिससे हम अपने विद्यार्थियों को आधुनिकतम तकनीकी और रिसर्च से जोड़ सकें । मानव और मशीन के बीच एक बेहतर तालमेल

हो और इसलिए साइंस और सोशल साइंस का सुंदर सामंजस्य होना चाहिए। क्योंकि यदि हम 'मानव विकास' की बात करते हैं, तब हमें अपना शारीरिक विकास, अपना बौद्धिक विकास, अपना मानसिक विकास आदि सब पर बात करनी होगी। इसीलिए नई शिक्षा नीति के अंदर भी बार-बार हम इंटर डिसिप्लिनरी अप्रोच की बात पर ज़ोर देते हैं ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

आज हम सबके सम्मुख सबसे बड़ी चुनौती है, मानसिक संतुलन बनाए रखने की और मन मस्तिष्क को सुदृढ़ और ऊर्जावान बनाने की। चारों तरफ हम देखते हैं कि तनाव ही तनाव है और यह तनाव इसलिए है क्योंकि परिवार व्यवस्था बदल रही है। आज शहरीकरण के प्रभाव में हम पर अर्बन लाइफ का प्रेशर है, वह चुनौतीपूर्ण है। हम सबके ऊपर डिजिटल ओवरलोड बहुत ज्यादा है, इंफॉर्मेशन का भी और एकेडमिक प्रेशर भी बहुत ज्यादा है। हम क्या करेंगे? ऐसे वातावरण में बच्चों के मेंटल वेलनेस के ऊपर किस तरीके से उनकी पीयर सपोर्ट हो? किस तरीके से उनकी काउंसलिंग हो? किस तरीके से उनका मेडिटेशन हो? किस तरीके से उनकी कम्युनिटी बेस्ड लर्निंगिंग हो? कैसे वो अपने आप को बैलेंस कर पाएं? उनके कार्य और जीवन के बीच का संतुलन आवश्यक है। यह कैसे मेंटेन करें? यह हम सबके लिए बहुत बड़ा चैलेंज है।

इसके साथ-साथ साथियों, हम सभी भली-भाँति जानते हैं कि आज हम एक ग्लोबल सोसाइटी में रह रहे हैं। ऐसे वैश्विक परिवेश में केवल अकादमिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि हमें ग्लोबल स्किल्स जैसे नेटवर्किंग, लीडरशिप, टीम-बिल्डिंग, डायवर्सिटी को समझना और कल्चरल कॉन्फ्लिक्ट्स को हैंडल करना जैसे स्किल्स भी विकसित करने होंगे। जब तक इन कौशलों को आत्मसात करने की हमारी क्षमता विकसित नहीं होगी, तब तक जिस समग्र शिक्षा की हम बात करते हैं, वह पूरी नहीं हो सकती। इसीलिए आवश्यक है कि हम इन क्षमताओं के विकास के लिए अपने यहाँ उपयुक्त सेक्टर, लर्निंग प्लेटफॉर्म और प्रभावी मैकेनिज़्म को विकसित करें, ताकि हम इस प्रकार की सभी चुनौतियों का व्यावहारिक समाधान दे सकें। क्योंकि आज हम सभी यह महसूस करते हैं कि हमारी सबसे बड़ी चुनौती यही है।

आज का युग हमें लगातार भौतिकवाद और मटीरियलिस्टिक वे ऑफ लाइफ की ओर ले जा रहा है। हम पश्चिमी विचारधारा, संस्कृति और जीवन-शैली से प्रभावित हो रहे हैं और धीरे-धीरे अपने मूल्य-तंत्र और ज्ञान-परंपरा को भूलते जा रहे हैं। ऐसे में आवश्यकता है कि हम आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाते हुए अपने रूट्स से जुड़े रहें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी यही संदेश देती है कि हमारे पास जो अनमोल और मूल्यवान ज्ञान-तंत्र है, उसे पुनः समझा और एकीकृत किया जाए। इसी ज्ञान-तंत्र के आधार पर सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी तक भारत को एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में जाना जाता था, चाहे वह कृषि हो,

हस्तशिल्प हो, डाइंग, केमिकल्स, पोर्सलीन, टेक्सटाइल या अन्य तकनीकें हों, भारत हर क्षेत्र में एक लीडिंग कंट्री था। कहीं न कहीं हमने उस विरासत को खो दिया, और आज समय है कि हम उस समृद्ध भारत से सबक लेकर, उसे आधुनिक संदर्भ में इंटीग्रेट करें और आगे बढ़ें।

मैं यहाँ लकीर के फकीर बनने की बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि नवाचार के साथ अपनी जड़ों से जुड़े रहने की बात कर रहा हूँ।

हमारे पास जो परंपरागत ज्ञान-तंत्र रहा है, उसकी उपयोगिता को आज के संदर्भ में रिसर्च स्कॉलर्स और शिक्षकों के रूप में हमें स्वयं परखना होगा। हमें उसे टेस्ट करना होगा, प्रयोग के स्तर पर उतारना होगा और यह समझना होगा कि किस प्रकार उस ज्ञान को व्यावहारिक रूप में लागू किया जा सकता है। यदि हम ऐसा कर पाते हैं, तो मुझे लगता है कि यही सही दिशा होगी।

वास्तव में, कोई भी देश अपनी कैपेबिलिटी तभी विकसित कर पाता है, जब वह आत्मनिर्भर बनने का साहस करता है। कोई भी व्यक्ति या समाज, जब तक केवल दूसरों की ओर देखता रहेगा, दूसरों की नकल करता रहेगा या दूसरों के सहारे चलता रहेगा, तब तक उसका स्वतंत्र और मौलिक विकास संभव नहीं है। हम तब तक विकसित राष्ट्र नहीं बन सकते, जब तक हम अपनी टेक्नोलॉजी, अपनी भाषा, अपने खानपान, अपने वैल्यू सिस्टम और अपनी स्वदेशी कंपनियों पर आत्मविश्वास के साथ खड़े नहीं होते।

इसी संदर्भ में यह भी अत्यंत आवश्यक है कि हम यह आत्ममंथन करें कि विश्वविद्यालयों में जो पाठ्यक्रम, शोध कार्य और एक्सटेंशन एक्टिविटीज़ चल रही हैं, वे हमारे आसपास के क्षेत्रों और समाज के लिए वास्तव में कितनी उपयोगी हैं। यदि हम अपने ज्ञान और विद्यार्थियों की क्षमताओं को स्थानीय परिवेश से जोड़ें, उन्हें केवल किताबों तक सीमित न रखकर फिजिकल लैब, फील्ड वर्क और प्रयोगात्मक अध्ययन की ओर ले जाएँ, और इन प्रयोगों से प्राप्त ज्ञान का उपयोग स्थानीय समस्याओं के समाधान में करें, तो हमारी शैक्षणिक और सामाजिक उपयोगिता कई गुना बढ़ जाएगी। इस प्रक्रिया से न केवल हम स्वयं सशक्त और स्वावलंबी बनेंगे, बल्कि हमारे युवा भी आत्मनिर्भर बनेंगे। पूरा तंत्र यथा विश्वविद्यालय, समाज और शासन सब एक-दूसरे के प्रति अधिक रिस्पॉन्सिव होगा। इससे समाज का विश्वास हमारे ऊपर और अधिक मजबूत होगा ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

यदि हम इन बिंदुओं को गंभीरता से ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ें और 2047 के विकसित भारत के लक्ष्य में अपना सार्थक योगदान दें, तो मुझे लगता है कि उसका प्रभाव कहीं अधिक व्यापक और स्थायी होगा। तभी हमारे कार्यों की प्रासंगिकता और सार्थकता भी वास्तव में सिद्ध होगी। इसी विषय पर आप सभी से गंभीरता से सोचने का आग्रह करता हूँ।

मैं सर्वप्रथम **प्रोफेसर हनुमैय्या** जी का हृदय से धन्यवाद देता हूँ, जो इतनी दूर से, विशेषकर दक्षिण भारत से, इस शीतकाल में यहाँ पधारे। आप भली-भाँति समझ सकते हैं कि सर्दियों में इतनी लंबी यात्रा करना कितना चुनौतीपूर्ण होता है। सर, आपकी उपस्थिति हमारे लिए अत्यंत सम्मान की बात है इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

मैं प्रोफेसर राम चंद्रा जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन किया। साथ ही उनकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने इस कार्यक्रम की योजना इतनी सुव्यवस्थित, सार्थक और प्रभावी ढंग से तैयार की।

यह कार्यक्रम प्रारंभ में एक दिन का निर्धारित था, किंतु इसकी प्रासंगिकता और गंभीरता को देखते हुए यह तीन दिवसीय बन गया। इन तीनों दिनों का मूल विषय यही है कि विकसित भारत के लक्ष्य में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय अपनी भूमिका किस प्रकार सुनिश्चित कर सकता है।

मैं प्रोफेसर कुशेन्द्र मिश्रा जी को भी विशेष धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने सभी के सहयोग से इंस्टीट्यूशनल डेवलपमेंट प्लान को विकसित किया।

इसी क्रम में **प्रोफेसर के. वी. राजू जी** का भी आभार, जिन्होंने इस इंस्टीट्यूशनल डेवलपमेंट प्लान को अत्यंत स्पष्ट और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। आगे भी इस विषय पर उनसे विस्तृत संवाद होता रहेगा, ऐसी हमें आशा है।

मैं **प्रोफेसर फुरकान कमर** जी का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने यहाँ आकर इस महत्वपूर्ण विषय पर अपने अनुभव और ज्ञान को हम सभी के साथ साझा किया।

अंत में, आप सभी को विश्वविद्यालय दिवस की एक बार पुनः हार्दिक बधाई देता हूँ।

धन्यवाद।